

मोदी सरकार के नेतृत्व में भारत का शैक्षिक पुनर्जागरण

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के प्रेरणादायी नेतृत्व में भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बढ़ायी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के प्रेरणादायी नेतृत्व में भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने और वैश्विक पद्धति पर मजबूती से उभरने के लिए अनेक ऐतिहासिक एवं दूरदर्शी पहल की हैं। विदेशी छात्रों के लिए आरंभ की गई -ई-छात्र वीज़ा- और -ई-छात्र-एक्स- वीज़ा योजनाएं इस दिशा में एक अद्वितीय मौल का पथर सिद्ध हो रही है। -ई-छात्र वीज़ा- भारत में उच्च शिक्षा के इच्छुक विदेशी छात्रों को आर्मित करता है, जबकि -ई-छात्र-एक्स- वीज़ा उनके परिजनों को साथ रहने की सुविधा देकर उन्हें आत्मीयता का अहसास कराता है। यह अनूठा कदम भारत को एक मैत्रीपूर्ण, समावेशी और विश्वस्तरीय शैक्षणिक गंतव्य के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक सशक्त प्रयास है। भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान और शिक्षा का अनुपम केंद्र रहा है। नालंदा और तक्षशिला जैसे महान विश्वविद्यालयों ने न केवल भारतीय शिक्षा की उक्तिष्ठाता का प्रमाण दिया, बल्कि इसे विश्वभर में एक आलोक स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने इस गौवर्णमी पंपंग को आर्थिक या करेगा। इसके साथ ही, यह पहल सांस्कृतिक आदान-प्रदान के क्षेत्र में भी एक नई क्रांति का सूत्रपात बनाएगी। विभिन्न देशों और पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्र भारत की बहुरंगी संस्कृति, प्राचीन परंपराओं और अतुलनीय अतिथ्य भावना का अनुभव करेंगे। यह -वसुधैव कुटुंबकम्- के शाश्वत सदेश को साकार करने में सहायक होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की कार्यशैली में दूरविष्ट, नवाचार और समग्रता का अद्वितीय समन्वय झलकता है। उनकी नीतियां भारत को शिक्षा के क्षेत्र में एक वैश्विक कंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में सशक्त कदम उठा रही हैं। वीज़ा प्रक्रिया को सरल बनाकर और छात्रों के परिजनों को -ई-छात्र-एक्स- वीज़ा के माध्यम से साथ रहने की अनुमति देकर, उन्होंने एक ऐसा वातावरण तैयार किया है जो शिक्षा के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियों को संभव बनाता है। -ई-छात्र वीज़ा- विदेशी छात्रों को स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएचडी और तकनीकी शिक्षा में अद्वितीय अवसर प्रदान करता है कि भारत में प्रचलित लगभग सभी गलियां महिलाओं को ही केंद्रित कर गढ़ी गयी हैं। मां बहन की गलियां तो लोग देते ही हैं परन्तु यदि किसी वर्ग द्वारा सबसे अधिक की जाती है तो वह है देश का राजनैतिक वर्ग। इन्हीं के मुंह से समय समय पर महिला सम्मान में ऐसे ऐसे लुभावने शब्द गढ़े व निकाल जाते हैं जिन्हें सुनकर एक बार तो यही धोखा होता है कि भारतीय पुरुषों विशेषकर राजनेताओं से अधिक महिला सम्मान की चिंता तो शायद पूरी दुनिया में किसी को भी नहीं होगी। कभी कन्या पूजन, कभी देवी कभी पूज्या कभी लाडली बहना, कभी लखपति दीदी तो कभी प्यारी दीदी कभी आधी आबादी जैसे अनेक लोकलुभावन नामों से पुकारा जाता है तथा उनके हित में ऐसे ही नामों की योजनायें भी चलाई जाती हैं। परन्तु सही मायने में यह सभी मुआफी मांगकर बगुला भगत बन जाते हैं। जैसे अभी पिछले दिनों दिल्ली भाजपा नेता रमेश बिधूड़ी द्वारा किया गया। रमेश बिधूड़ी 2014 व 2019 में दो बार दक्षिणी दिल्ली से सांसद रह चुके हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा ने उन्हें लोकसभा प्रत्याशी तो नहीं बनाया था परन्तु इस बार बिधूड़ी को भाजपा ने कालकाजी विधानसभा सीट से संभवतः अपना प्रत्याशी तो बनाया है परन्तु उनकी बदजूबी के चलते उन्हें चुनावी मैदान से हटाये जाने की खबरें सुनाई देने लगी हैं। पिछले दिनों रमेश बिधूड़ी ने अपने चुनाव क्षेत्र में एक जनसभा को संबोधित करते हुये कहा कि- लालू ने बाद किया था कि बिहार की सड़कों को होमा मालिनी के गालों जैसा बना दिंगा, लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाया। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, जैसे ओरखला और संगम विहार की सड़कें बना दी हैं, वैसे ही कालकाजी में सारी की सारी सड़कें प्रियंका गांधी के गाल जैसी बना दूँगा। दूसरी सभा में विधूड़ी ने अपने विरुद्ध आप आदमी पार्टी की प्रत्याशी व दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी के सरनेम को लेकर इसी तरह की ओर्ही टिप्पणी करते हुये उनके बुजुर्ग पिता तक को अपनी घटिया टिप्पणी में शामिल कर लिया। उसके बाद बड़ी ही शातिराना अंदाज़ में मुआफी मांगकर मामले को रफा दफा करने की कोशिश की परन्तु उनके बजाए भीतर का विकार बाहर निकल चुका था। अपनी बायर की पार्टी की ओर फ़ज़ीहत के बाद बिधूड़ी ने यह कहकर अपना मुंह छुनाने की कोशिश की कि - मेरा आशय किसी को अपमानित करने का नहीं था। परन्तु फिर भी अगर किसी भी व्यक्ति का दुख हुआ है तो मैं खेद प्रकट करता हूँ। इसी भाजपा के दिल्ली के नेता प्रवेश वर्मा ने दिल्ली के पिछले विधानसभा कौन कौन से भड़े बोल नहीं बाले गये ? किसी नेता ने कायेस की विधवा शब्द का इस्तेमाल किया किसी ने 50 करोड़ की गलं पैरंड तक कह दिया था कि-दिल्ली के लोगों को सोच-समझकर फैसला कहकर महिला समाज को नीचा दिखने का प्रयास किया। कभी विधवा शब्द का इस्तेमाल किये गये तो किसी ने महिलाओं को टंच माल बताया। कभी मंगलसूत्र पर प्रहार किया गया तो कभी महिलाओं को मुजरा करने से जोड़ा गया। किसी ने मंडी का भाव पूछा तो किसी ने महिलाओं के लिये परकटी शब्द का प्रयोग किया। न जाने कितने सांसद, विधायक व मंत्री, पांचांडी धर्मगुरु, उच्चाधिकारी आदि महिलाओं के यौन शोषण के आरोपी हैं और रहे हैं। कोई अपनी पत्नी को त्याग कर देश की महिलाओं के कल्याण की बातें कर रहा है तो कई बिन ब्याहे नेता लोगों को घर गृहस्थी का सलीका सिखा रहे हैं। मणिपुर में देश की महिलाओं के साथ जो दुष्कृत्य वहां की शासन व्यवस्था की नाकामी के कारण लंबे समय से होते आ रहे हैं उसे लेकर पिछले दिनों 18 महीने बाद गज्ज के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने ऐसी घटनाओं पर पीड़ितों से मुआफी मांग कर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर दी। और इन सबसे शर्मनाक बात यह भी है कि महिलाओं के पक्ष विपक्ष की बातें भी अब देशों ने इस बयान पर अपत्ति जताई थी। गोया ऐसे बयानों से न केवल महिलाओं के प्रति इनकी दुर्भावना व ओछापन जाहिर होता है बल्कि यह देश की बदनामी का भी सबब बनते हैं। याद कीजिये हमारे देश में महिलाओं को नमन करने का ढोंग करने ऐसे नेता द्वारा कौन कौन से भड़े बोल नहीं बाले गये ? किसी नेता ने कायेस की विधवा शब्द का इस्तेमाल किया किसी ने 50 करोड़ की गलं पैरंड तक कह दिया था कि-दिल्ली के लोगों को सोच-समझकर फैसला लेना होगा। ये लोग आपके घरों में घुसेंगे, आपकी बहन-बेटियों को उठाएंगे, रेप करेंगे, उनको मारेंगे। इसी तरह भाजपा के बंगलुरु से फ़यर बांड सांसद तेजस्वी सूर्य ने 2015 में ट्वीट कर अपना अधकचरा ज्ञान सांझा करते हुये कहा था कि - 95 प्रतिशत अरब महिलाएं ऐसी हैं जिन्होंने पिछले कई वर्षों में ऑर्जेम (कामोतेजना की चरम अवस्था) का अनुभव नहीं किया है। हर माने ने बच्चे बस सेवक व उनके बजह से पैदा किए हैं न कि यार की ओरोपी हैं और रहे हैं। कोई अपनी पत्नी को त्याग कर देश की

महिला सम्मान की उम्रीद और इनसे ?

निर्मल रानी

हमारे समाज में महिला हितों व उनके सम्मान की बातें यदि किसी वर्ग द्वारा सबसे अधिक की जाती है तो वह है देश का राजनीतिक वर्ग। इन्हीं के मुन्ह से समय समय पर महिला सम्मान में ऐसे ऐसे लुभावने शब्द गढ़े व निकाले जाते हैं जिन्हें सुनकर एक बार तो यही धोखा होता है कि भारतीय पुरुषों विशेषकर राजनेताओं से अधिक महिला सम्मान की चिंता तो शायद पूरी दुनिया में किसी को भी नहीं होगी। कभी कन्या पूजन, कभी देवी कभी पृज्ञा कभी लाडली बहाना, कभी लखपति दीदी तो कभी प्यारी दीदी कभी आधी आवादी जैसे अनेक लोकलुभावन नामों से पुकारा जाता है तथा उनके हित में ऐसे ही नामों की योजनायें भी चलाई जाती हैं। परन्तु सही मायने में यह सभी राजनीतिक प्रपंच केवल महिलाओं के बाट बैंक साधने मात्र के लिए ही किये जाते हैं। इस पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की वास्तव में क्या इज़ज़त है इसे समझने के लिये केवल एक ही तरक पर्याप्त है कि भारत में प्रचलित लगभग सभी गलियां महिलाओं को ही केंद्रित कर गढ़ी गयी हैं। मां बहन की गलियां तो लोग देते ही हैं परन्तु यदि सबसे हल्की गाली यानी कोई किसी को साला भी कहता है तो भी वह उसकी बहन को ही गरिया रहा होता है। सदियों से ऐसे ही धारणा पाले हुये इस पुरुष प्रधान समाज से महिलाओं द्वारा मान सम्मान आदर सत्कार सुरक्षा या संरक्षण की उम्मीद करना कृतई बेमानी है और यह महिलाओं द्वारा केवल अपने को धोखे में रखना है। काफी दिनों से एक प्रवृत्ति यह भी देखी जा रही है कि पहले लोग अपनी विकृत सोच को अपने जहरीले बोल के द्वारा बाहर निकलते हैं। उसके बाद जब उन की बदकलामी के चलते उनपर दुनिया थकने लगती है तो बड़ी ही चतुरुई से यह सधे हुये शब्दों में मुआफी मांगकर बगला भगत बन जाते हैं। जैसे अभी पिछ्ले दिनों दिल्ली भाजपा नेता रमेश बिधूड़ी द्वारा किया गया। रमेश बिधूड़ी 2014 व 2019 में दो बार दाकिणी दिल्ली से सांसद रह चुके हैं। पिछ्ले लोकसभा चुनाव में भाजपा ने उन्हें लोकसभा विधायियां भाजपा की कोशिश की परन्तु तब तक उनके भीतर का विकार बार बिधूड़ी को भाजपा ने कालकाजी विधानसभा सीट से संभवतः अपना प्रत्याशी तो बनाया है परन्तु उनकी बदजुबानी के चलते उन्हें चुनावी मैदान से हटाये जाने की खबरें सुनाई देने लगी हैं। पिछ्ले दिनों रमेश बिधूड़ी ने अपने चुनाव क्षेत्र में एक जनसभा को संबोधित करते हुये कहा कि- लालू ने बाद किया था कि बिहार की सड़कों को हेमा मालिनी के गालों जैसा बना दूगा, लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाया। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं जैसे आखला और संगम विहार की सड़कें बना दी हैं, वैसे ही कालकाजी में सारी की सारी सड़कें प्रियंका गांधी के गाल जैसी बना दूंगा। दूसरी सभा में बिधूड़ी ने अपने विरुद्ध आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी व दिल्ली की मुख्यमंत्री अतिशी के सरनेम को लेकर इसी तरह की ओछी टिप्पणी करते हुये उनके बुर्जुर्ग पिता तक को अपनी घटिया टिप्पणी में शामिल कर लिया। उसके बाद बड़ी ही शातिराना अंदाज में मुआफी मांगकर मामले को रक्फ़ा दफ़ा करने की कोशिश की परन्तु बाहर निकल चुका था। अपनी व अपनी पार्टी की ओर फ़ूजीहत के बाद बिधूड़ी ने यह कहकर अपना मुंह छुपाने की कोशिश की कि - मेरा आशय किसी को अपमानित करने का नहीं था। परन्तु फिर भी अगर किसी भी व्यक्ति को दुख हुआ है तो मैं खेद प्रकट करता हूँ। इसी भाजपा के दिल्ली के नेता प्रवेश वर्मा ने दिल्ली के पिछ्ले विधानसभा चुनावों के दौरान शाहीन बाग के आदोलन का ज़िक्र करते हुये यहाँ तक कह दिया था कि- दिल्ली के लोगों को सोचे-समझकर फैसला लेना होगा। ये लोग आपके घरों में घुसेंगे, आपको बहन-बेटियों को उठाएंगे, रेप करेंगे, उनको मारेंगे। इसी तरह भाजपा के बंगलुरु से फ़ायर ब्रांड सांसद तेजस्वी सूर्य ने 2015 में ट्रीटीट कर अपना अधिकचरा ज्ञान साझा करते हुये कहा था कि - 95 प्रतिशत अरब महिलाएं ऐसी हैं जिन्हें पिछ्ले कई वर्षों में ऑर्जेम (कामेतेजना की चरम अवस्था) का अनुभव नहीं किया है। हर मां ने बच्चे बस सेक्स की वजह से पैदा किए हैं न कि यार की वजह से। सूर्या की इस घटिया व निम्न स्तरीय टिप्पणी के बाद कई अरब देशों ने इस बयान पर आपत्ति जताई थी। गोया ऐसे बयानों से न केवल महिलाओं के प्रति इनकी दुर्भावना व ओछापन जाहिर होता है बल्कि यह देश की बदनामी का भी सबब बनते हैं। यदि कीजिये हमारे देश में महिलाओं को नमन करने का ढोंग करने वाले ऐसे नेताओं द्वारा कौन कौन से भद्रे बाल नहीं बोले गये ? किसी नेता ने कांग्रेस की विधावा शब्द का इस्तेमाल किया किसी ने 50 करोड़ की गर्त परेंड कहकर महिला समाज को नीचा दिखाने का प्रयास किया। कभी विधावा विलाप शब्द इस्तेमाल किये गये तो किसी ने महिलाओं को टंच माल बताया। कभी मंगलसूत्र पर प्रहर किया गया तो कभी महिलाओं को मुजरा करने से जोड़ा गया। किसी ने मंडी का भाव पूछा तो किसी ने महिलाओं के लिये परकटी शब्द का प्रयोग किया। न जाने कितने सांसद, विधायक व मंत्री, पाखंडी धर्मगुरु, उच्चाधिकारी काउंटर करने की कोशिश की जाती है। ऐसे में इन अवसरावादी व सत्ता लोभी राजनीतिओं से महिला सम्मान की उम्मीद रखना कितना व्यवहारिक

नये भारत के निर्माण में प्रवासी भारतीयों की शक्ति लगेगी

ललित गर्ग
प्रवासी भारतीय दिवस भारत के विकास में प्रवासी भारतीय समुदाय के योगदान को चिह्नित करने के लिए हर साल 9 जनवरी को मनाया जाता है। 1915 में इसी दिन महात्मा गांधी, सबसे बड़े प्रवासी के रूप में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौट थे और भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया। यह दिवस भारत सरकार का एक प्रमुख, दूरगमी एवं उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रम है, जौ विदेशों में बसे भारतीयों को भारत के साथ जोड़ने और आपस में संवाद करने का एक मंच प्रदान करता है। इस वर्ष का 18वां प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन 8 से 10 जनवरी 2025 के बीच अंडिशा राज्य सरकार के सहयोग से भुवनेश्वर में आयोजित किया जा रहा है। इस वर्ष के इस दिवस की थीम है :विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान। यह थीम भारत को आत्मनिर्भर और विश्वस्तरीय विकसित राष्ट्र बनाने में प्रवासी भारतीयों के योगदान को रेखांकित करती है। क्योंकि प्रवासी भारतीय आज वैश्विक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट शक्ति बन गया है, जो हर क्षेत्र में एक ऊर्जावान और आत्मविश्वासी समुदाय के रूप में विकसित होकर भारत का गौरव बढ़ा रहा है और विभिन्न देशों में उच्च पदों पर स्थापित होकर विश्व मामलों में शनादार योगदान दे रहा है। प्रवासी भारतीयों ने असाधारण समर्पण, प्रतिभा कौशल, लगान और कड़ी मेहनत का प्रदर्शन करते हुए कला, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, खेल, व्यवसाय, शिक्षा, फिल्म परोपकार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित जीवन के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट बनने के लिए कई चुनौतियों को पार किया है। दुनिया में सर्वाधिक प्रवासी भारतीय हैं। वर्तमान में खाड़ी देशों में लगभग 8.5 मिलियन भारतीय रहते हैं जो दुनिया में प्रवासियों की सबसे बड़ी आबादी है। संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 4 मिलियन भारतीय हैं। यहाँ मैक्सिको के बाद भारतीयों की दूसरी सबसे अधिक आबादी है। इसके अतिरिक्त कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, मलेशिया, मॉरीशस, श्रीलंका, सिंगापुर, नेपाल सहित अन्य देशों में प्रवासी भारतीयों की बड़ी आबादी रहती है। विदेशों में रहते हुए भी प्रवासी भारतीय अपने देश, अपनी माटी, अपनी संस्कृति एवं अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं। आज की तारीख में भारतीय नई शक्ति के तौर पर अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर अपना लोहा मनवा चुके हैं। विश्व बैंक की रिपोर्ट में बताया गया है कि पूरी दुनिया में सबसे अधिक पैसा भारतीयों ने अपने देश भेजा है। विश्व बैंक के आंकड़ों से पता चला है कि 2024 में भारत को प्रवासी भारतीयों से 129 बिलियन डॉलर का धन मिला है। यह अब तक का सबसे ज्यादा है। भारत की विकास गाथा लिखने के साथ परोपकारी कार्य करने के लिए प्रवासी भारतीयों द्वारा भेजे गए धन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रवासी भारतीयों को अपनी सास्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही साझा पहचान मिली है। उनकी सफलता का श्रेय उनकी परम्परागत सोच, सांस्कृतिक मूल्य, ऐश्वर्यिक योग्यता एवं प्रतिभा को दिया जाना चाहिए। वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रांति में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रवासी भारतीयों की ताकत को देखते हुए और उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ने के लिए 2002 में एनडीए की अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने हर वर्ष 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाने का निर्णय किया था। नौकरी, उद्योग, व्यापार और दूसरे कई कारणों से अपना देश छोड़कर दूसरे देशों में रहने वालों में भारतीयों की आबादी दुनिया में सर्वाधिक है। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और कई अन्य देशों में भारतीय वहाँ की सरकारों में मंत्री और सांसद तो निर्वाचित हुए ही हैं बल्कि नीति निर्धारक विभागों में उच्च पदों पर आसीन हैं। भारतीयों की खासियत है कि वे जिस भी देश में गए उहोंने वहाँ की संस्कृति और संविधान को आत्मसात कर लिया। वहाँ के व्यापार, उद्योग, चिकित्सा क्षेत्र आदि में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भले ही प्रवासी भारतीयों ने वहाँ का सब कुछ आत्मसात कर लिया है लेकिन वह भारत माता की माटी की सुगम्य को नहीं भूले। उनकी रासों में भारत की संस्कृति एवं संस्कार रचे-बसे हैं। प्रवासी भारतीयों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता एक वास्तविकता बन सकती है। भारत ने नवंबर 2017 में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्यायमूर्ति दलवार भंडारी की पुनर्नियुक्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र में दो-तिहाई मत हासिल कर अपने राजनयिक प्रभाव का प्रदर्शन किया। यह कोई छोटी बात नहीं है कि दुनिया के कोने-कोने में भारतवंशी और प्रवासी भारतीयों की राजनीतिक, अर्थिक और कारोबारी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती ऊंचाइयां भारत के तेज विकास के मद्देनजर महत्वपूर्ण हो गई हैं। दुनिया के अनेक देशों में कई और भारतवंशी राजनेता अपने-अपने देशों को आगे बढ़ाते हुए विश्व के समक्ष भारत के चमकते हुए चेहरे हैं। साथ ही ये विश्व मंच पर भारत के हितों के हिमायती भी हैं और हरसंभव तरीके से भारत के विकास में अपना अहम योगदान देते हुए भी दिखाई दे रहे हैं। इतना ही नहीं, दुनिया के विभिन्न देशों में राजनीति की ऊंचाइयों पर पहुंचने के साथ-साथ भारतवंशी व प्रवासी भारतीय वैश्विक आर्थिक व वित्तीय संस्थानों अर्डिटी, कम्प्यूटर, मैनेजमेंट, बैंकिंग, वित्त आदि के क्षेत्र में भी बहुत आगे हैं। इसमें कई दो मत रचे-बसे हैं। प्रवासी भारतीयों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की भारतीयों के लिए विदेशों की नई संस्कृति में ढलकर इस तरह की सफलता हासिल करना आसान नहीं होता है। ऐसे विभिन्न क्षेत्रों के चमकते सितारे अपनी चमक का लाभ मार्गभूमि भारत के लिए भी विस्तारित कर रहे हैं। गौरतलब है कि अमेरिका सहित दुनिया के विभिन्न देशों में भारत को विकास की डगर पर आगे बढ़ाने के लिए भारत हितैषी संगठन काम कर रहे हैं। पिछले वर्ष 2023 में भारत की जी-20 की अध्यक्षता और विगत 9-10 सितंबर को नई दिल्ली में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन को सफल बनाने में प्रवासी भारतीयों के संगठन 'ईंडियास्पोरा' का अभूतपूर्व योगदान रहा है। हुए विश्व के समक्ष भारत के चमकते हुए

डीसी ने आंगनबाड़ी सेविका सहायिका को भगतान करने का दिया निर्देश

संवाल प्रक्षमोम संवाददाता



करने का निर्देश पदाधिकारी को दिया। मैंके पर अपर समाहर्ता श्री जेम्स सर्गिन लिखेष कर्त्या पदाधिकारी

त्रिभूवन कुमार सिंह, कार्यपालक
दंडाधिकारी विकास कुमार त्रिवेदी,
जिला सचिव कल्याण पटाधिकारी

बसंती ग्लाडिस बाड़ा उपस्थित थे एवं
वीसी के मध्यम से सभी प्रखण्ड
विकास प्राधिकारी जद्दे टा थे।

उधवा ने किया टॉफी पर कष्ट।



संताल एक्सप्रेस संवाददाता हिरण्यपुर (पाकड़)फुटबाल मैदान में आयोजित जेप्पमएम चैम्पियंस ट्रॉफी का फाइनल मैच बुधवार को उथवा और धूलियान के बीच खेला गया। जिसमें उथवा ने धूलियान को 88 रनों से हराकर ट्रॉफी अपना नाम किया। मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाज़ी करते हुए उथवा की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में 225 रनों का स्कोर खड़ा कर दिया। उथवा की ओर से अभिनाश ने 48 रनों शानदार पारी खेली। जवाब में बल्लेबाज़ी करने उत्तरी धूलियान की टीम 137 रनों में ही आलआउट हो गई। मैच में 48 रनों की पारी खेलने व 3 विकेट लेने वाले अविनाश को मैन ऑफ द मैच चुना गया। वहीं फाइनल में विनर टीम उथवा को ट्रॉफी के साथ एक लाख का चेक देकर समाजसेवी लूथफुल हक के पुत्र अकिलबूल हक ने पुरस्कृत किया। रनर टीम को ट्रॉफी के साथ 70 हजार का चेक देकर समाजसेवी जावेद आलम और मुस्लुमिन अंसारी ने पुरस्कृत किया। पूरा टूर्नामेंट का मैन ऑफ द सीरीज़ अबरार खान को चुना गया। खिल में अम्पायर कि भूमिका शयामा एवं कुंदन ने निर्भाई। और साथ में राहुल ने एंकर कि और स्कारर के रूप में आकाश कुमार ने भूमिका निभाया। आयोजन को सफल बनाने में कमिटी के अध्यक्ष बीकास रविवास, सचिव जितेंद्र

सहजकर्ता दल के परीक्षण का हआ समापन



संताल एक्सप्रेस संचादादातालिंग्पाडा (पाकुड़) पंचायत विकायोजना के तहत प्रखंड के सभागार भवन में आयोजित तीन दिवसीय ग्रंथायत सहजकर्ता दल के सदस्यों का द्वितीय फेज का प्रशिक्षण का समाप्त बुधवार को किया गया। आयोजित तीन दिवसीय के दौरान उपरिक्षित सहजकर्ता दल कर सदस्यों को मास्टर ट्रेनर प्रखंड समव्यक अधिषंख गोंड, परेश कुमार भारती, बन्दना कुमारी, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी कमल पहड़िया, इमरान आलम के द्वारा जीपीडीपी के उद्देश्यों पर विस्तृत पूर्वक जानकारी दिया एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से ग्राम पंचायत विकायोजना संबंधित अपेक्षाएं एवं उद्देश्य, सहभागिता के लिए संबंधित नियम सतत विकास लक्ष्य एवं उन विषयों के ऊपर समझ बनाना, सतत विकायएवं हमारे क्षेत्र की समस्याओं के बोच संबंध, साझा पहलू पर सामाजिक मानचित्र और संसाधन मानचित्र के ऊपर समझ बनाना सभी के भागीदार से सहयोगी पूर्ण विचित परिवारों जैसे एकल महिला, बुद्धि विकलांग आदि का चिंहितकरण विषय पर विस्तृत जानकारी दी गई। मैंके पर उपरिक्षित बोडीओं संजय कुमार ने बताया ग्राम पंचायत के समुचित विकास

पुलिस अधीक्षक ने हिरण्यपुर निर्माणाधीन आवास भवन का किया विरोधाभास



संताल एक्सप्रेस संवाददाताहिरणपुर(पाकुड) पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार ने बुधवार को हिरण्यपुर निर्माणाधीन थाना भवन का निरीक्षण किया। करोड़ों की लागत से निर्माण हो रहे इस भवन निर्माण कार्य को लेकर एसपी ने निरीक्षण क्रम में सभी कक्ष का अवलोकन किया। वही चाहरदावारी सहित अन्य निर्माण कार्य का भी निरीक्षण किया। एसपी ने निरीक्षण के दौरान सम्बन्धित कम्पनी के अविनाश कुमार को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि 25 जनवरी तक हर हालात में निर्माण कार्य को पूर्ण करना होगा। जिससे कि 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण हो सक। उहोने कहा कि थाना प्रांगण में रखे हुए पथर धुला को हटा देना है। थाना प्रभारी रंजन कुमार को निर्देश देते हुए कहा कि पुराने थाना भवन काफी जर्जर स्थिति में है। नए भवन निर्माण कार्य पूर्ण होने साथ पुराने जर्जर भवन को तोड़ देना है। बताते चले की नए थाना भवन निर्माण कार्य को लेकर एसपी द्वारा निस्तर रूप से अनुश्रवण कार्य की जा रही है। वही निर्दिष्ट समय पर भवन निर्माण कार्य पूर्ण कराने को लेकर निर्देश भी देते रहे हैं। जो आज भवन निर्माण कार्य समस्या पर्णा द्वे की स्थिति में है।

**कगजपुर गांव में सहायिका पद के लिए
साजिदा बीबी को किया गया चयनित**



महेशपुर (पाकुड़) प्रखंड के धर्मखांपड़ा पंचायत अंतर्गत कागजपुर गांव में बुधवार को महेशपुर बीड़ीओ सह सीड़ीपीओ डीकर शिद्धार्थ शंकर यादव के द्वारा ग्राम सभा के माध्यम से सहायिका साजिदा बीड़ी को चयनित कर वरीय अधिकारी को रिपोर्ट सौंप दिया है । वही इस मौके कर बीड़ीओ सह सीड़ीपीओ शिद्धार्थ शंकर यादव ने जानकारी देते हुए बताया की निदेशक, समाज कल्याण बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग, झारखंड, रांची के प्रतांक 3083/एस.के दिनांक-03.12.2024 द्वारा विशेष अभियान के माध्यम से पूर्ण किये जाने वाले सेविका सहायिका के पद की रिक्तियों के विरुद्ध लंबित चयन के आलोक में उपायुक्त, पाकुड़ के सुचित आदेशांक 1282/एस.के दिनांक-28.12.2024 द्वारा समय एवं तिथि निर्धारित कर एक आगनबाड़ी केन्द्र हतु पर्यवेक्षक की प्रतिनियुक्त कर उपरोक्त

